विपश्यना

[साधकों का मासिक प्रेरणापत्र]

रजि. नं. १९१५६/७१
पोस्टल रजि. नं. NS (M)-16/84

वर्ष १४ • बम्बई • बुद्धवर्ष २५२८ • माघ पौर्णिमा [शक] • दि. ५-२-१९८५ • अंक ८

प्रेरक प्रसंग

(४)

पटाचारा

जलधारा रुक गयी

भगवान बुद्धके जीवनकालकी एक घटना।

कोशलदेशकी राजनगरी श्रावस्ती। नगरका महाधनी श्रेष्ठी-परिवार। छोटे-बड़े अनेक कमरोंवाली वैभव-संपन्न ७ मंजिली विशाल अट्टालिका। इसमें केवल चार सदस्योंका यह छोटासा श्रेष्ठी-परिवार रहे– सेठ, सेठानी, एक छोटा पुत्र और एक पुत्री। पुत्री किशोर अवस्थाको पार कर मदमाते यौवनमें पांव रख रही। घरमें ऐशोआरामके सारे साधन। बाहर भी "सर्व अस्ति" श्रावस्ती, आमोद-प्रमोद और खेल-तमाशोंके आकर्षक मनोरंजनोंसे भरी हुई महामायानगरी। पिताको धन कमानेका नशा, रात-दिन इसी में मशगूल रहे। माताको अन्यान्य सामाजिक आयोजनोंमें उलझे रहनेका शौक। बच्चोंकी जरा भी देखभाल नहीं, सार-संभाल नहीं। छोटे पुत्र के लिए एक अलग नौकर रखा हुआ। युवा पुत्री की सेवा पर एक दूसरा युवा नौकर, जिसके बुरे संसर्ग ने उस अल्हड़ नवयौवनाकी उभरती उमरमें वासनाका ज्वार जगा दिया। पांव लड़खड़ाए और एक बार फिसली तो फिसलती ही चली गयी। उस विशाल हवेली में एकांत अनाचारकी भरपूर सुविधाएँ। दोनों पापके कीचड़में दिनोंदिन धंसते गए।

लड़की २० वर्ष की हुई तो मां-बापको उसके हाथ पीले करनेकी याद आयी। एक सुखी-संपन्न प्रतिष्ठित परिवारके योग्य पुत्रसे सगाई कर दी गई। विवाहका दिन भी निश्चित हो गया। आज घरमें बारात आनेवाली है। यहाँ दोनों अनाचारियोंको चिंता होने लगी। पराए घर जानेके बाद तो एक दूसरेको देख भी न सकेंगे। शरीर संबंधों की बात तो दूर।

वासनाके पंक-पुतलेको मिथ्या प्रेमका सुन्दर चोंगा पहनाकर और उस पर भ्रामक त्यागके भड़कीले आभूषण सजाकर दोनोंने अपने दुष्कर्मोंका न्यायीकरण किया और भाग निकलनेका फैसला किया। दोनोंने संकल्प किया ---- भले गरीबीमें रहें, पर साथ रहेंगे। घरमें बारात आनेके पहले ही दोनोंकी पलायन-योजना सफल हुई। थोड़ा-बहुत जो भी धन-आभूषण बटोर सके, बटोरकर निकल भागे और नगरसे दूर एक छोटे से गांवमें जा बसे।

साथ लाया हुआ धन बहुत दिन काम न आ सका। पाप कर्मोंका फल उदय होने लगा। अत्यंत विपन्न अवस्थामें दिन बीतने लगे। दो वर्ष बाद युवतीको गर्भ रह गया। जैसे जैसे गर्भ बढ़ने लगा, वैसे वैसे चिंता भी। ऐसी विपन्न अवस्थामें कैसे प्रसव होगा? कैसे बच्चेकी देख-भाल होगी? मां-बापकी याद सताने लगी। मेरे दुष्कर्म की वजहसे उनकी प्रतिष्ठा धूलमें मिली। वे इस कारण बहुत नाराज होंगे। पर मैं जाकर क्षमा मागूंगी तो वे क्षमा कर ही देंगे। आखिर मां-बाप हैं न! शीघ्र पीहर जानेके लिए मन उतावला हो उठा। पति घबराया। उसे डर था कि श्रावस्ती जाने पर उसे बहुत बड़ा राज-दंड भोगना पड़ेगा। अतः वह चलनेके लिए आज-कल, आज-कल के बहाने बनाता हुआ टालने लगा। पतिके मिथ्या आश्वासनों से निराश होकर गर्भ की बढ़ी हुई अवस्थामें उस दुखियारी युवती ने अकेले ही जानेका फैसला किया। पति जब बाहर काम पर गया हुआ था तो पड़ोसन को सूचना देकर श्रावस्तीकी ओर निकल पड़ी। रास्तेमें बियाबान वन था। पर थकी मांदी निर्भय हो अकेली चली जा रही थी। घर लौटने पर पति को जैसे ही सूचना मिली, वह भी पीछे पीछे दौड़ा आया। परंतु पत्नी वापस चलनेके लिए तैयार नहीं हुई। लाचार पति भी उसके साथ हो लिया। राह चलते गर्भोत्थान

धम्म वाणी

चतूसु समुद्देसु जलं परित्तकं
ततो बहुं अस्सुजलं अनप्पकं।
दुक्खेन फुट्ठस्स नरस्स सोचनो
किं कारणा अम्म तुवं पमज्जसी॥

थेरीगाथा अट्ठकथा– ५/१०.

बार-बार दुःख और दुश्चिंताओंमें निमग्न हुए व्यक्ति ने इतना अश्रुजल बहाया है जिसके मुकाबले चारों महासमुद्रों का जल भी कम है। इसे समझ। बेटी! तू क्यों बेहोशी में डूबी है?

हुआ और वहीं जंगलमें एक पुत्रका जन्म हुआ। अब पतिके बहुत आग्रह करने पर वह उसके साथ अपने घर लौट आयी।

इसी प्रकार दीन अवस्थामें दो वर्ष और बीते। उसे फिर गर्भ रहा। फिर मां-बाप याद आने लगे। फिर पति उसी प्रकार बहाने बनाने लगा। टाल-मटोल करने लगा। फिर उसी प्रकार उसने अकेली जानेका फैसला किया और बच्चेको गोदमें लेकर गर्भ की बढ़ी हुई अवस्थामें श्रावस्ती की ओर चल पड़ी। पति पीछे-पीछे दौड़ा हुआ आया और उसी प्रकार फिर निर्जन वनमें गर्भोत्थान हुआ। प्रसवका समय आया। दुर्भाग्यसे उसी समय आकाशमें बिना मौसम की तेज आंधी उठी और उसके बाद घनघोर वर्षा होने लगी। कहीं सिर छुपानेकी जगह नहीं। प्रसव-पीड़ा बढ़ती जा रही थी। उसे आश्रय की जरूरत थी। पतिने सोचा वैभवमें पली इस श्रेष्ठी-पुत्री की यह दुरावस्था मेरे ही कारण हुई। मुझे इसे आंधी-पानीसे बचानेके लिए कुछ तो करना ही चाहिए। क्यों न कहींसे कुछ लकड़ियाँ काट लाऊँ और सूखे पत्ते बटोरकर इसके लिए सिर छुपाने लायक एक पर्णकुटी ही बना दूँ। उस काल अंधेरी रातमें वह इस उद्देश्यसे निकल पड़ा और रातभर लौटा नहीं। गर्भवती युवती पानी और कीचड़भरे राह पर पड़ी कराहती रही। उसका अरण्य-रोदन सुननेवाला कोई नहीं। कौन सहायता करे? ऐसी बिकट स्थितिमें फिर प्रसव हुआ। एक नन्हेंसे बच्चे को जन्म दिया। सुबह पौ फटने तक भी पति नहीं लौटा तो घबराई। दोनों बच्चोंको छातीसे चिपकाए हुए, पतिको ढूंढने निकली। कुछ ही दूर गयी कि देखा उसके पतिका शरीर अकड़ा और नीला हुआ पड़ा है। उसके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। उसे किसी विषधर सांपने डस लिया था। क्या करती? रोती, बिलखती, दोनों बच्चोंको छातीसे चिपकाए अकेली श्रावस्तीकी ओर चल पड़ी।

प्रलयंकारी वर्षा रुकनेका नाम नहीं ले रही थी। रास्तेके छोटे-छोटे नाले भी नदियों जैसे बन गए थे। छोटीसी अचिरवती नदिया इस बाढ़ के मारे बहुत विशाल-काय हो गई थी। दो-दो बच्चोंको लेकर एक साथ इस नदीको कैसे पार करे? अतः एक युक्ति लगाई। बड़े बच्चे को समझा-बुझाकर नदीके इसी तट पर छोड़ा और नवजात शिशुको लेकर नदी पार कर गई। परले पार पहुँचकर नन्हें बच्चेको कपड़ेमें लपेटकर एक झाड़ीके नीचे लिटाया और अब बड़ेको ले आनेके लिए फिर नदी पार करने लगी। पर आंखें नवजात शिशु पर ही लगी थीं। उसे कुछ हो न जाय। बीच मझधारमें पहुँची तो देखती है कि एक बहुत बड़ा गिद्ध उस शिशुको मांसका लोथड़ा समझकर उस पर झपट रहा है। बच्चेको बचानेके लिए और गिद्ध को उड़ानेके लिए वह जोर-जोरसे शू-शू की आवाज करने लगी और अपने दोनों हाथ हिलाने लगी। गिद्ध पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह नवजात शिशुको अपने पंजोंमें दबोचकर उड़ गया। परंतु इसका बुरा असर इस पार बैठे बच्चे पर हुआ। उसने मां की आवाज सुनी और उसे जोरोंसे हाथ हिलाते देखा तो समझा कि मां मुझेही बुला रही है और वह शीघ्रतापूर्वक नदी में कूद पड़ा। दुखियारी असहाय मां। देखते-देखते बच्चा तेज बहावमें बह गया।

पतिको सांपने डस लिया, एक पुत्रको गिद्ध दबोच ले गया, दूसरेको नदी बहा ले गयी। अभागन नारी रोती, बिलखती श्रावस्तीकी ओर चल पड़ी। पर अभी उसे और दुर्दिन देखने थे। दुष्कर्मोंका और फल पकना बाकी था। श्रावस्ती पहुँचनेके पहले स्मशान घाटसे गुजरी तो देखा वहाँ चितापर मुर्दे जलाए जा रहे हैं। श्रावस्तीसे आते हुए एक राहगीरसे प्रश्न किया तो पता चला कि रातके तेज आंधी-तूफान-मेहके कारण नगरके सेठका सात मंजला महल गिर पड़ा, जिसमें दबकर सेठ, सेठानी और उनका इकलौता पुत्र मर गया। अरे! वही तो उसका बाप था, वही उसकी मां थी और वही उसका एकमात्र भाई था। चितापर उन्हींकी लाशें जलाई जा रही थीं। इस दुस्संवादसे उस पर दुखोंका पहाड़ टूट पड़ा। अब संसारमें उसका कोई नहीं रह गया। वह अपना होश न संभाल सकी। वहीं पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

कुछ देर बाद उठी तो खोया हुआ होश खोया ही रहा, वापस नहीं आया। पूर्णतया विक्षिप्त हो गई। एक-एक करके शरीर परके सारे कपड़े गिरा दिए। कुछ भी होश नहीं। पूर्ण नग्न श्रावस्तीकी सड़कों और गलियों पर सिर धुनती, छाती पीटती, बिलखती फिरने लगी।

"हाय! मेरे पतिको सांप डस गया। नन्हेंको गिद्ध झपट ले गया। बड़ेको नदी बहा ले गयी। मां, बापू, भाई दबकर मर गए और एक साथ चिता पर जलाए गए।" लोग उसका करुण विलाप सुनते। दुखी होते। पर क्या करते उसकी पागलोंकी सी हरकतें देखकर अपने घरके किवाड़ बंद कर लेते। कोई उसे पास नहीं आने देता। "पगली पगली" कहकर बच्चे उसके पीछे दौड़ते, उस पर ढेले फेंकते, धूल फेंकते।

ऐसी दुरावस्थामें अपने पूर्व पुण्यके कारण वह एक दिन जेतवन विहारके पाससे गुजरी। वहाँ भगवान एक बड़ी सभा को धर्म समझा रहे थे। लोगोंने उसे आते देखा तो दूर भगाना चाहा। कहीं यह पगली औरत धर्मसभाकी शांतिमें विघ्न न पैदा कर दे। परन्तु भगवानकी नजर उस दुखियारी पर पड़ी तो लोगोंको रोका। दुखियारी भगवानके समीप आयी। भगवानने करुणाभरे शब्दोंमें कहा, "मेरी दुखियारी बेटी! होश संभाल!" वाणी में अमृत भरा था। सुनते ही उस दुखियारीको जरासा होश आया। उसका ध्यान अपने सर्वथा नग्न शरीर पर गया तो लाजके मारे सिकुड़ गयी। वहीं उकुड़ू बैठ गयी। समीप खड़े किसी भाई ने उस पर अपनी चादर डाली। उसने तुरन्त चादर ओढ़ ली। विक्षिप्त अवस्थामें सभी वस्त्रोंको त्याग देनेके कारण इस चादर ओढ़ी हुई दुखियारी का नाम "पटाचारा" पड़ गया। लोग उसका पूर्व नाम ही भूल गए।

पटाचारा भगवानके और समीप आयी और अपने दोनों पांव, दोनों हाथ, और सिर धरतीको छुआकर पंचांग प्रणाम करती हुई बोली; "भन्ते भगवान! मुझे शरण दीजिए, मैं बहुत दुखियारी हूँ।"

"बेटी! तू सही शरण-स्थान पर आ गयी है। तुझे यहाँ अवश्य शरण मिलेगी।" भगवानने आश्वासन भरे शब्दोंमें कहा।

"भन्ते भगवान! मेरे पतिको काले नागने डस लिया। एक पुत्रको गिद्ध दबोच ले गया। दूसरे को नदी बहा ले गयी। माता-

पिता, भाई दबकर मर गए। उन्हें एकसाथ चितापर जलाया गया। अब संसारमें मेरा कोई नहीं। मुझे कौन शरण देगा?"

अपने दुखोंको यादकर पटाचारा फिर फूट-फूटकर रोने लगी।

"बेटी होश कर! माता-पिता, भाई-बंधु, पति-पुत्र शरण नहीं दे सकते। सही शरण तो अपना धारण किया हुआ धर्म ही देगा। तू कौनसे प्रिय स्वजनों की मृत्यु पर दुखके आंसू बहा रही है? इस अनादि भव-संसारमें तूने अनगिनत बार जन्म लिया है। सभी जन्मों में तेरे प्रिय स्वजन मरे हैं। उनके मरने पर तूने जितने आंसू बहाए हैं यदि एक जगह एकत्र कर दिए जाँय तो इन चारों महासमुद्रोंका जल भी उसके मुकाबले कम होगा। और कितने जन्मों तक इसी प्रकार प्रिय-वियोग में रोती रहोगी? प्रमाद छोड़! होशमें आ! समझदारको चाहिए कि इस असीम दुखमय भवसागरकी सच्चाईको समझकर शीघ्र से शीघ्र मुक्तिका मार्ग खोजे। सदाके लिए दुःख-विमुक्त हो जाय।"

भगवानकी वाणीने अमृत बरसा। योग्य पात्रने उसे ग्रहण किया। भगवानकी वाणी सुनते सुनते उस दुखियारीका चित्त एकाग्र हुआ। थोड़ी देरके लिए स्वमुखी हुआ, अन्तर्मुखी हुआ। शरीरके अणु-अणु में उदय-व्ययकी प्रत्यक्ष अनुभूति हुई। अनेक जन्मोंकी असीम पुण्य-पारमीके कारण इस अनित्यबोधकी धर्म-गंगामें सारे पाप-ताप धुलने लगे। वहीं बैठे-बैठे पटाचाराने निर्वाण अवस्थाका साक्षात्कार किया। श्रोतापन्न हुई।

कृतज्ञता-विभोर हो भगवानको नमस्कार किया और उनसे प्रव्रज्याकी याचनाकी। भगवानने उसे भिक्षुणियोंके पास भेजकर प्रव्रजित करवाया और पटाचारा मुक्तिके मार्ग पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ हुई।

जो भव-संस्कार बचे थे, उनका सामना करना था। उन्हें भी अंतर्तप करते हुए विपश्यना की अग्निमें जलाना था। काम करनेमें कठिनाइयाँ आ रहीं थीं। कभी-कभी अकाल-मृत्युको प्राप्त हुए स्वजनों, प्रियजनोंकी फिर याद आ जाती थी। एक दिन सायंकाल दृढ़ चित्तसे साधनाकी तैयारीमें लगी। बाल्टीसे लोटा भर जल लेकर अपने पांव धोए। सूखी जमीन पर बहता हुआ जल कुछ ही दूर जाकर सूख गया। आगे न बढ़ पाया। एक लोटा पानी पांव पर और डाला। इस बार जलधारा पहली की अपेक्षा कुछ और दूर जाकर सूख गयी। तीसरी बार पांव पर पानी डाला तो जलधारा कुछ और दूर जाकर सूख गयी।

इस छोटीसी घटनाने भीतरके ज्ञानतंतुओंको झकझोर दिया। मोहजन्य अज्ञानका पर्दा दूर हुआ। जैसी जलधारा वैसीही जीवन-धारा। इस संसारमें किसी किसीकी जीवनधारा कम उम्रमें ही सूख जाती है। किसी किसीकी मझली उम्रमें और किसी किसीकी बड़ी उम्रमें। पर मरते तो सभी हैं। कोई नहीं बचता। इस मरणानु-स्मृतिके आधार पर साधना करने बैठी। उसी समय भगवानके अमृतभरे बोल कानोंमें गूंज उठे।

यो च वस्ससतं जीवे अपस्सं उदयब्बयं।
एकाहं जीवितं सेयो पस्सतो उदयब्बयं॥

उदय-व्ययकी सच्चाईको विपश्यना द्वारा देखे बिना कोई भले १०० वर्ष भी जिए, पर उसके मुकाबले उदय-व्ययको देखते हुए एक दिनका जीना भी अधिक श्रेष्ठ है, श्रेयस्कर है।

धर्मवाणी सुनकर साधिका पटाचाराका रोम-रोम रोमांचित हो उठा। मैंने जीवनके २५ वर्ष अपने भीतर उदय-व्ययका दर्शन किए बिना ही गंवा दिए। अब भगवानकी असीम अनुकम्पासे इस सत्यका साक्षात्कार हुआ है। इसी सत्यके प्रति साक्षीभाव रखनेसे मुझे निर्वाण के प्रथम दर्शन हुए थे। इसी उदय-व्ययका निरंतर दर्शन करते करते आगेकी अवस्थाएँ प्राप्त होंगी। किसान खेतमें परिश्रम करता है। जोतता है, बोता है तो फल प्राप्त करता है। मैं शुद्ध शीलमें प्रतिष्ठित बुद्ध-पुत्री। उनके बताए मार्ग पर अप्रमत्त हो पुरुषार्थ करूं तो परम मुक्त अवस्था प्राप्त कर ही लूंगी। यों दृढ़ निश्चय करके अपनी कुटियामें विपश्यना करने बैठी।

समीप जलते हुए दीपककी लौ मंद पड़ने लगी तो सूईसे ठीक करने की कोशिश की। परन्तु इससे लौ बुझ गयी। जिस प्रकार इस दीपककी लौ बुझी, उसी प्रकार मेरे राग, द्वेष, और मोहके संस्कारोंकी लौ बुझेगी और मनुष्य जीवन सार्थक होगा।

पटाचारा अधिक दृढ़-चित्तसे विपश्यनामें लग गयी। शरीर और चित्तके प्रपंचको उसके अनित्य स्वभावमें तटस्थ भावसे देखते-देखते अन्तर्मन पर पड़ी हुई भव-संस्कारोंकी परतें उतरने लगीं और रात बीतनेके पहले ही वह श्रोतापन्नसे सगदागामी, सगदागामीसे अनागामी और अनागामीसे अर्हत अवस्था तक जा पहुँची। भवचक्र टूटा। नितांत विमुक्ति मिली। मनुष्य जीवन सफल हुआ; सार्थक हुआ।

पटाचारा भगवानकी प्रमुख शिष्याओंमेंसे एक हुई। जिन थोड़ेसे भिक्षु-भिक्षुणी, गृहस्थ पुरुष-नारियोंको भगवानने अग्र की उपाधि दी, उनमेंसे पटाचारा भी एक थी। भिक्षुणियोंके विनय नियमोंको अच्छी तरह जानने और उनका पालन करनेवाली साध्वियोंमें पटाचारा अग्र मानी गयी। उसने अपना सारा शेष जीवन अपनी जैसी दुखियारी नारियोंको धर्म के मार्ग पर आरूढ़ कर दुख-मुक्त करानेमें ही बिताया। अपने कल्याणके साथ साथ अनेकोंके कल्याणका कारण बनी। पटाचारा विपश्यना को और विपश्यना पटाचारा जैसी साध्वीको पाकर धन्य हुई।

स. ना. गो.

साधकोंके उद्गार

बम्बईमें एक सिलाईकी दूकानपर बटन टांकनेका काम करने-वाला मजदूर साधक बसंत कांबले, अत्यंत गरीबीका जीवन जीते हुए भी धर्म के प्रति कितना आस्थावान है, उसीके शब्दोंमें, "मेरे जीवनमें और घरमें बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। बहुत कुछ बाहरी लोगोंके साथ व्यवहार-बर्तावमें परिवर्तन नजर आता है। घरमें दारिद्र्य है फिर भी धर्म के कारण बड़ी शांति है। मैं अपनी अल्प पूंजीमें से थोड़ासा धम्मगिरि को अर्पित करता हूँ। इससे एक दिन भी किसी एक साधकको भोजन मिले तो यह दान कितना फलवान हो जाएगा। गुरुजी! घरमें स्थानाभाव है फिर भी सुबह ४ से ५-३० तक तथा सायं ८ से ९-३० बजे तक नियमित रूपसे साधना एवं मंगल मैत्रीका अभ्यास करता हूँ। आशिर्वाद दें।"...

साधकोंके उद्गार

प्रज्ञापूर्ण जीवन

विद्यापीठके प्रारंभिक दिनोंकी बात है। धम्मगिरि पर पेड़ लगानेके लिए गड्ढे खोदे गए थे। पथरीली जमीनके खड्डोंको मिट्टी-खाद आदिसे भरना था। अपनी ही जमीनके एक कोनेमें पर्याप्त मिट्टी थी जिसे कि ट्रकसे ऊपर लाना था। परंतु आश्चर्यकी बात कि इगतपुरी की नगरपालिकाके अधिकारियोंने मिट्टी निकालनेसे मना कर दिया। वन-विभागकी ओरसे पेड़ लगानेको इतना प्रोत्साहन दिया जाता है फिर भी अधिकारीयोंने किसी दलील पर ध्यान नहीं दिया।

अधिकारियोंकी इस धौंस-पट्टी का सबक सिखानेके लिए जिला-कलक्टरको एक लम्बा-चौड़ा शिकायती पत्र लिखा ही था कि संयोगवश पू. गुरुजी बम्बईसे आ गए। सारी बात बताते हुए उन्हें पत्र दिखाया। पत्र पढ़नेके बाद वे मुस्कराए तो लगा कि शाब्बासी देंगे। परंतु उन्होंने पूछा, "इस क्षेत्रको छोड़कर अपनी जमीनके किसी अन्य हिस्सेमें मिट्टी नहीं है ? हमने कहा, "हाँ, उत्तरकी ओर भी है।" "तो वहीं से लाओ न ! जो अपनी ओर पेट्रोल छिड़कते हों, उन पर पानी ही डालना चाहिए, चिंगारी नहीं। भले उनकी टाउन-प्लानिंगकी योजना झूठी साबित हो रही हो, पर अपना काम चल जाता हो तो लड़ाई करनेसे क्या फायदा !" पू. गुरुजीके संत-सुलभ मैत्री एवं प्रज्ञापूर्ण व्यवहार-कौशल्यको देखकर मन शांत और गदगद हो गया।

भोजराज ताराचंद संचेती. इगतपुरी.

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-११० ००७.
की मंगल कामनाओं सहित
↓

दूहा धरम रा

के बा जाती, बो बरण, के बो कुल, बो गोत।
जो जनम्यो सो भुगतसी, जरा ब्याधि अर मोत ॥१॥
के अनपढ़ बिद्वान के, के निरधन धनवान।
आगै पीछै सै गया, काळ चक्र बलवान ॥२॥
बासदेव बलराम के, के अरजुन के भीम।
एक एक नै निगलग्यो, सबळो काळ असीम ॥३॥
कोई जावै आज ही, कोई जावै काल।
एक न बाकी बच सकै, काळ बड़ो बिकराळ ॥४॥
आयुस सैं की अबल है, सबल एकलो काळ।
बड़ा बड़ा पुरसारथी, पड़ै काळ कै गाल ॥५॥
यो तो काचो सूत सो, मत कर ईं की आस।
ओटो आयो ही नहीं, गयो जो बारै सांस ॥६॥

दोहे धर्म के

कोई शरण न दे सके, मात पिता सुत नार।
शरण देय बस धरम ही, धरम लेंय यदि धार ॥१॥
कोई बालक ही गया, कोई गया जवान।
कोइ वृद्ध होकर गया, मरना अमिट विधान ॥२॥
धर्म धार कर ले सफल, जीवन के दिन चार।
न जाने किस क्षण रुके, सूखे जीवन धार ॥३॥
मानव जीवन रतन सा, वृथा न देयँ गंवाय।
निरखत अन्तर उदय-व्यय, मंगल बोध जगायँ ॥४॥
हाय पुत्र ! हा प्राण धन, हाय पिता, हा माय !
हाय हाय करते हुए, जीवन बीता जाय ॥५॥
मत रो मत रो बावली ! रोए चैन गंवाय।
जीवन भर रोए मगर, बिछुड़े लौट न आय ॥६॥

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक : रामप्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३. दूरभाष : ८६
मुद्रण स्थान : अक्षरचित्र मुद्रणालय, सातपूर, नासिक-४२२ ००७. टेलिफोन : ८८२५१ ● वार्षिक शुल्क रु. १०/- आजीवन शुल्क रु. १००/-

"विपश्यना" 2/85

Licence No. NS 18
Licensed to post without pre-payment

पो. र. नं. NS(M) 16/84

प्रेषक :
सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
विपश्यना विश्व विद्यापीठ
धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०१.
(नासिक, महाराष्ट्र)

To